सत्यमेव जयते

हिंदी दिवस 2025

के अवसर पर

माननीय गृह मंत्री जी

का संदेश

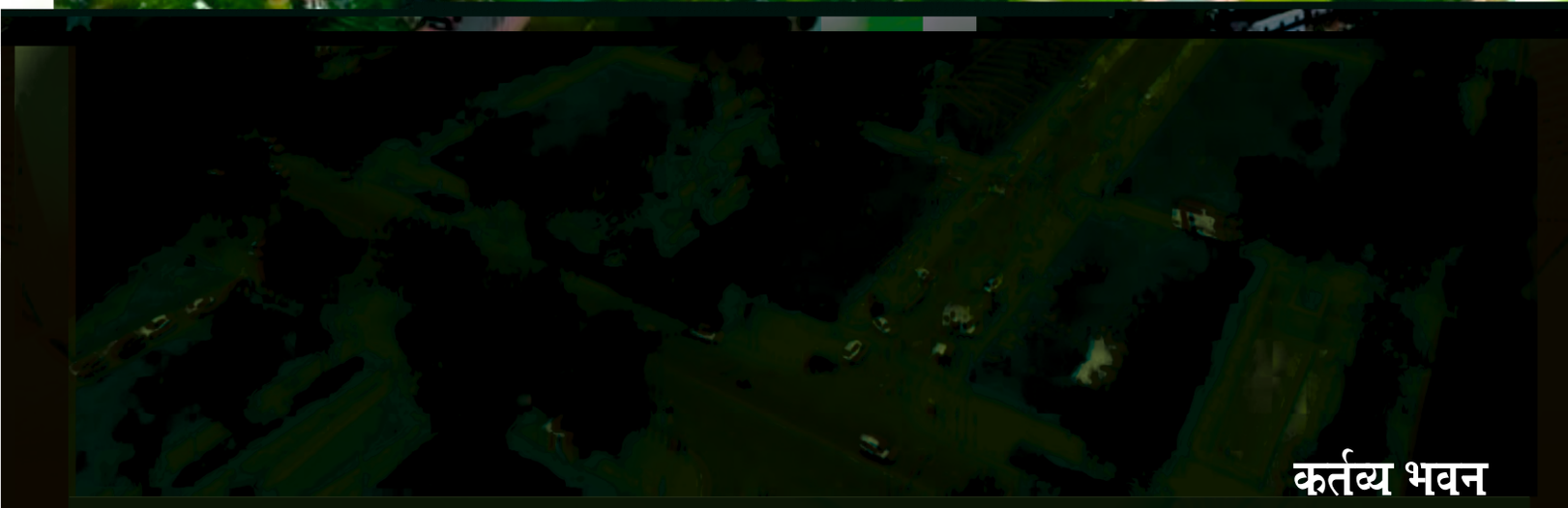

कर्तव्य भवन

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्‌भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह

50

(1975-2025)

राजभाषा – भारतीयभाषाणां मैत्रीसूत्रम्

साबरमती आश्रम

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय

जीतन राम मांझी
सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्री

शोभा करांदलाजे
सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम राज्य मंत्री

संदेश

हिंदी अपनी सहजता, शब्द—संपदा और अन्य भाषा के शब्दों को अपनाने के प्रति उदारता के कारण आज बहुत समृद्ध और लोकप्रिय भाषा है। विश्व मंच पर माननीय प्रधानमंत्री जी के हिंदी में संबोधन से भी हाल के वर्षों में हिंदी की ओर दुनिया भर का ध्यान आकर्षित हुआ है और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसकी गरिमा बढ़ी है। माननीय गृहमंत्री जी भी सार्वजनिक मंचों पर हिंदी में ही अपनी बात रखते हैं जिससे हिंदी का गौरव बढ़ा है और इसके प्रति अनुकूल वातावरण तैयार हुआ है।

हर भाषा एक खास तरह की सांस्कृतिक पहचान लिए होती है। आज़ादी ने हमें अपनी भाषा को स्थापित करने का अवसर भी दिया है। इसी को ध्यान में रखकर वर्ष 1949 में संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया था जिसकी स्मृति में हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। ख़ासकर हाल के वर्षों में, सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग लगातार बढ़ा है। प्रसन्नता का विषय है कि एमएसएमई मंत्रालय और इसके अधीनस्थ कार्यालयों में भी हिंदी में कामकाज को बढ़ावा मिल रहा है जिसकी प्रशंसा संसदीय राजभाषा समिति ने भी की है।

माननीय प्रधानमंत्री जी का यह कथन महत्वपूर्ण है कि हमारी भाषाएं जितनी समृद्ध होंगी, हमारी ज्ञान प्रणालियां उतनी ही मज़बूत होंगी। भाषा के रूप में हिंदी भी हमारी वैश्विक ताक़त है; हमें इस पर गर्व होना चाहिए और इसे गति प्रदान करनी चाहिए। स्वयं एमएसएमई मंत्रालय अपने उद्यमियों के साथ संवाद में हिंदी को प्राथमिकता दे रहा है। ई—टूल्स ने दफ़्तरों में हिंदी में काम करना आसान बना दिया है। ऐसे में, यह हम सबकी सामूहिक आकांक्षा होनी चाहिए कि हम भी सरकारी कामकाज में हिंदी के उपयोग के अपने दायित्व का निर्वाह करें और अन्य के लिए प्रेरणा—स्रोत बनें।

जय हिंद, जय हिंदी।

जीतन राम मांझी
सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्री

शोभा करांदलाजे
सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम राज्य मंत्री

File No. ई-11011/01/2023-हिंदी-Part(1) (Computer No. 4025439)
Generated from eOffice by KUMAR RADHA RAMAN, DD(KRR)-Hindi Section, DEPUTY DIRECTOR, MSME1 on 12/09/2025 03:03 pm

डॉ. टी.वी. सोमनाथन
Dr. T.V. Somanathan

सत्यमेव जयते

मंत्रिमंडल सचिव
भारत सरकार
CABINET SECRETARY
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

"हिंदी दिवस 2025" के अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ!

हिंदी भाषा को संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था, और तब से यह दिन हर साल हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। हिंदी दिवस का उद्देश्य हिंदी भाषा के प्रति जागरूकता बढ़ाना और इसे प्रोत्साहित करना है।

साहित्यिक दृष्टि से हिंदी भाषा समृद्ध होने के साथ, अब यह कम्प्यूटर, इंटरनेट और सोशल मीडिया की भाषा भी बन गई है। यह कला, वाणिज्य और विज्ञान तीनों अकादमिक विषय-धाराओं की भाषा के साथ–साथ विश्व के अनेक देशों में बोली, समझी और पढ़ी जाने वाली भाषा भी बन गई है।

संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार, हम सभी अपने–अपने मंत्रालयों और विभागों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने पर जोर देते हैं। आज हमारे पास हिंदी में काम करने के सभी तकनीकी संसाधन, उपकरण और सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं। हम सब हिंदी समझते, बोलते, पढ़ते और लिखते भी हैं, और हमने अपने प्रयासों से पर्याप्त सकारात्मक परिणाम प्राप्त किए हैं, तथापि हमें अभी इस दिशा में और प्रगति करनी है।

आइए, हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में अपना योगदान सुनिश्चित करें।

जय हिंद !

सोमनाथन

(टी. वी. सोमनाथन)

14 सितम्बर 2025

Cabinet Secretariat, Rashtrapati Bhavan, New Delhi-110004
Tel.: 011-23016696, 23011241 Fax : 011-23018638 E-mail : cabinetsy@nic.in